क्या बुराई को परमेश्वर ने बनाया?

बचपन से परमेश्वर को एक दयालु और भले परमेश्वर के रूप में और यह कि वह कोई बुराई नहीं कर सकता (और यह सही भी है), जानने वाला व्यक्ति बाइबल की यह आयत पढ़कर चौंक जाएगा: ''मैं उजियाले का बनाने वाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं'' (यशायाह 45:7)।[1]

डेविड ह्यूम का तर्क था कि बुराई का होना दिखाता है कि परमेश्वर में भलाई या शक्ति की कमी है। अथेने के प्राचीन दार्शनिक एपिकुरुस ने ये प्रश्न उठाए थे:

> क्या वह बुराई को रोकना चाहता है, परन्तु रोक नहीं सकता? तो फिर वह लाचार है। क्या वह रोक सकता है, परन्तु रोकना नहीं चाहता? तो फिर उसमें दुर्भावना है। क्या वह रोक सकता है और रोकना नहीं चाहता? तो फिर बुराई क्यों है?[2]

यद्यपि यह एक ढीठ तर्क है जो सब तथ्यों का ज्ञान होने की कल्पना करता है, तौभी बहुत से लोग बुराई की इस बड़ी समस्या से जूझते रहे हैं। लगता है कि मनुष्य इसका समुचित उत्तर नहीं दे सकता, परन्तु बाइबल का प्रकाशन व्यावहारिक समाधान के साथ-साथ इसका कुछ उत्तर देता है।

नैतिक बुराई परमेश्वर की ओर से नहीं है

बाइबल बताती है कि बुराई की कई किस्में हैं। नैतिक बुराई (जैसे कि हत्या करना) पूर्णतया उससे जो ''पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:3) बाहर है। हमारा परमेश्वर ''सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है'' (व्यवस्थाविवरण 32:4)। आत्मा की प्रेरणा प्राप्त याकूब ने दावा किया था कि ''न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न ही वह किसी की परीक्षा आप करता है'' (1:13)। यदि परमेश्वर ''प्रेम'' का स्वरूप है (1 यूहन्ना 4:8), तो उसका बुराई में लिप्त होना असम्भव है। इसका अर्थ यह हुआ कि

नैतिक बुराई का परमेश्वर से कोई सम्बन्ध नहीं है।

परमेश्वर आज्ञा न मानने वालों के लिए दण्ड के रूप में बुराई लाता है

किसी भी प्रकार की नैतिक बुराई के अतिरिक्त, वह बुराई भी है जिसे ''अनुशासनात्मक बुराई'' कहा जा सकता है। परमेश्वर उस बुराई का रचयिता और उत्पन्न करने वाला होने का दावा करता है।

समय के प्रारम्भ में, जब उसकी बनाई हुए प्रत्येक वस्तु ''बहुत अच्छी'' (उत्पत्ति 1:31)[3] थी, परन्तु आदम और हव्वा द्वारा आज्ञा तोड़ने पर परमेश्वर को अपने अच्छे संसार को श्राप देना पड़ा। इसके बाद कांटे, झाड़ियां, कठिन परिश्रम, पीड़ा, बीमारियां, परजीवी, सूखे, तूफ़ान और भूकम्प आ गए। परमेश्वर ने अपनी महान बुद्धि से आदम की अगली पीढ़ियों के लिए आज्ञा न मानने के दण्ड के रूप में मृत्यु ठहरा दी (देखिए उत्पत्ति 3:17, 18), उनके लिए भी ''जिन्होंने ... आदम के अपराध की नाईं ...,पाप न किया'' (रोमियों 5:14)। पिता और पुत्र को एक दूसरे का कष्ट मिल सकता है, परन्तु किसी के पाप का दोष दूसरे पर नहीं डाला जाएगा (यहेजकेल 18:20)। पाप का प्रभाव तो एक से दूसरे व्यक्ति तक जा सकता है (निर्गमन 20:5), परन्तु पाप का दोष नहीं (रोमियों 14:12)।

इस्राएल के बाद के इतिहास में, परमेश्वर ने जब एक दुष्ट नगर का विनाश करने के लिए शत्रुओं को भेजा तो यह स्वर्ग की ओर से अनुशासन था। आमोस 3:6 कहता है, ''क्या किसी नगर में नरसिंगा फूंकने पर लोग न थर थराएंगे ? क्या यहोवा के बिना भेजे किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी ?'' यरूशलेम नगर पर पड़ी बुराई को यिर्मयाह ने परमेश्वर की ओर से दण्ड कहा था: ''देखो, जो नगर मेरा कहलाता है, मैं पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूंगा, फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके बचोगे ? तुम निर्दोष ठहरके न बचोगे, ...'' (यिर्मयाह 25:29)।

मार-काट, अकाल और विनाश परमेश्वर की अनुशासनात्मक बुराई के उदाहरण हैं। हम पढ़ते हैं, ''सुनो, अब मैं उनकी भलाई नहीं, हानि ही की चिन्ता करूंगा ...'' (यिर्मयाह 44:27);''इस कारण, यहोवा यों कहता है, मैं इस कुल पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं, जिस के नीचे से तुम अपनी गर्दन हटा न सकोगे, न अपने सिर ऊंचे किए हुए चल सकोगे; क्योंकि वह विपत्ति का समय होगा'' (मीका 2:3)।

यशायाह 45:7 का संदर्भ फारस के राजा कुस्त्रु के नाम स्वर्ग से भेजा गया था जिसका अभी जन्म भी नहीं हुआ था, कि वह आगे बढ़कर अपने सामने के राज्यों को वश में कर ले। परमेश्वर ने बहुत से देशों पर अनुशासनात्मक बुराई भेजनी थी और कुस्त्रु ने स्वर्गीय हथियार के रूप में काम करना था।

इसलिए परमेश्वर किसी गलत कार्य में शामिल नहीं होता, पवित्र अनुशासन करते हुए ही वह ''बुराई उत्पन्न करता'' है।

एक अनुशासनात्मक माप के रूप में परमेश्वर बुराई भेजता है

ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने परमेश्वर के नियमों (प्राकृतिक या प्रकाशन) का उल्लंघन नहीं किया परन्तु वे लोग उस फसल को काट रहे हैं जो उन्होंने कभी बोई ही नहीं (गलतियों 6:7); अर्थात उन्हें बहुत से कलेश झेलने पड़ रहे हैं। अय्यूब ने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जिससे उसके शरीर पर छाले पड़े, परन्तु उसे इस बात का पता नहीं था कि उसके शरीर पर फोड़े होने की अनुमति देने में परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध का उद्देश्य था। अय्यूब इतना भला था कि उसने परमेश्वर की निन्दा करने से इन्कार कर दिया (अय्यूब 2:9, 10) और धीरज दिखाया (याकूब 5:11), फिर भी परमेश्वर ने उसमें अहंकार तथा विद्रोह की आत्मा (अय्यूब 13:2, 3; 23:2) अर्थात धीरज में कमी देखी (अय्यूब 21:4)। उसकी आंखें इशारे करती थीं (अय्यूब 15:12) और अपने बनाने वाले के साथ वह विवाद करना चाहता था (अय्यूब 13:3)। दुख के समय ने इस आदमी को दीन बना दिया। परमेश्वर की डांट सुनकर उसने ''धूलि और राख में'' पश्चात्ताप किया (अय्यूब 42:6)। उसकी अनुशासनात्मक बुराई के कारण वह पहले से कहीं अधिक अच्छा व्यक्ति बन गया था।

पौलुस ने भी कोई ऐसा काम नहीं किया था जिससे उसे सताने वाली पीड़ा अर्थात ''शरीर में एक कांटा'' (2 कुरिन्थियों 12:7) हो जिसने उसे बहुत सताया था। उसने यह जाने बिना कि परमेश्वर ने ही उसे दीन बनाने के लिए उस तीव्र पीड़ा को अनुमति दी थी उससे छुटकारे के लिए प्रार्थना की। इस कांटे के लिए पौलुस ने परमेश्वर की निन्दा करने के बजाय, उसका धन्यवाद किया कि उसका पिता उससे इतना प्रेम करता है और उसे इस बात का अहसास हुआ कि ''जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (2 कुरिन्थियों 12:10)। इब्रानियों 12:11 कहता है, ''और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।''

यीशु ने भी दुख सहकर आज्ञा मानना सीखा था। उसने भी छुटकारे के लिए प्रार्थना की थी। परन्तु परमेश्वर इस बात को देख सकता था कि उसे सिद्ध बनाने के लिए अनुशासन आवश्यक था (इब्रानियों 5:7-9)।

परमेश्वर प्रतिनिधिक बुराई का कारण है

यीशु पर आने वाली भयंकर पीड़ा में, उसके सिद्ध होने के अलावा एक और उद्देश्य भी था। इसमें उसने ''हमारे लिए पाप'' ठहर कर (2 कुरिन्थियों 5:21) ''बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया'' (यशायाह 53:12)। वह हमारा प्रतिनिधि बनकर दुख उठा रहा था।

एक व्यक्ति अंधा पैदा हुआ था, यह उसके माता-पिता के पाप के कारण नहीं था (यद्यपि कई बार ऐसा माता-पिता के पाप के कारण होता है), न ही यह उसके अपने पापों के कारण था (यद्यपि कई बार कोई व्यक्ति खुद ही अपने अंधे होने का कारण बनता है)। इस आदमी के अंधे होने का परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध के अनुसार एक उद्देश्य था (यूहन्ना

9:1-3)। ''उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं'' (रोमियों 11:33)! परमेश्वर के विचार प्रकट होते देखकर मनुष्य आश्चर्य ही करते हैं।

सारांश

जब तक किसी के पास हर प्रश्न का उत्तर नहीं है तब तक वह उस परमेश्वर पर अभियोग नहीं लगा सकता जो भलाई करता है ''और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता'' है (प्रेरितों 14:17)। विश्वास व्यावहारिक बातों से दृढ़ होता है (इब्रानियों 11:1), परन्तु भरोसे का तत्व विश्वास में ही है। यदि विश्वास को पूरी तरह से दिखाया जा सकता, तो यह विश्वास न रहता। भलाई करने वाले परमेश्वर का प्रमाण इसके विपरीत होने से कहीं अधिक बड़ा है (देखिए भजन संहिता 40:5)। फिर तो एक ईमानदार व्यक्ति को इस सारे प्रमाण पर विचार करके यह मानना और प्रार्थना करनी चाहिए कि, ''हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपाय कर'' (मरकुस 9:24)। घमण्डी व्यवहार से (रोमियों 9:20) कभी किसी समस्या का समाधान नहीं होता, बल्कि हमेशा इससे अपने आपको ही हानि और अप्रसन्नता का सामना करना पड़ता है। जब बुराई की समस्याएं पूरी तरह से सुलझने वाली न लगें, जब किसी के जीवन में संघर्ष हो, तो धन्य है वह व्यक्ति जो प्रभु से प्रेम करता और उस पर भरोसा रखता है। बेशक हम हर बात को न समझें, तौभी ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)।

पाद टिप्पणियां

[1]अंग्रेज़ी संस्करण NASB का हिन्दी अनुवाद (evil)''विपत्ति'' के बजाय (calamity)''बुराई'' होता है। [2]*ह्यूम सिलेक्शन्ज़,* सं. चार्ल्स डब्ल्यू. हैंडेल जूनियर (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्ज़, 1955), 365 में डेविड ह्यूम, ''डायलॉग्स कंसर्निंग नैचुरल रिलिजन।'' [3]जब सब कुछ ''बहुत अच्छा'' था, तो कोई बुराई नहीं थी; परन्तु पाप के आने पर, परमेश्वर ने कहा कि वह दण्ड के रूप में ''विपत्ति लाएगा''(यशायाह 45:7)। यिर्मयाह 25:29; 44:27; मीका 1:12; 2:3; भजन 125:4, 5; यशायाह 31:2; दानिय्येल 9:14 भी देखिए।